व्याकरण

1. 'ओ' का उच्चारण स्थान है –
→ ओष्ठ्यौष्ठ्य

2. 'व' का उच्चारण स्थान है –
→ दंतौष्ठ्य

3. वर्ण कितने प्रकार के होते हैं?
→ दो

4. स्वरों वर्णों की संख्या कितनी है?
→ ग्यारह

5. व्यंजन वर्ण कितने प्रकार के होते हैं?
→ तैंतीस

6. 'क' वर्ण का उच्चारण स्थान है?
→ कंठ

7. हिन्दी में वर्णों की कुल संख्या कितनी है?
→ चौवालीस

8. 'ल' और 'स' का उच्चारण स्थान बताएँ →
→ दंत

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

9. 'राष्ट्रीयता' शब्द में कौन-सी संज्ञा है?
→ भाववाचक।

10. 'खुरदरा' शब्द कौन-सी संज्ञा है?
→ विशेषण।

11. 'उड़ना' क्रिया की भाववाचक संज्ञा होगी।
→ उड़ान।

12. 'अच्छा' विशेषण की भाववाचक संज्ञा क्या होगी?
→ अच्छाई।

13. 'अभिनेता' शब्द का स्त्रीलिंग होगा।
→ अभिनेत्री।

14. 'सभापति' शब्द का स्त्रीलिंग रूप लिखें।
→ सभापत्नी।

15. 'शिक्षक' शब्द का स्त्रीलिंग होगा।
→ शिक्षिका।

16. 'आचार्य' शब्द का स्त्रीलिंग होगा
→ आचार्याणी।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

17. 'अध्यक्ष' शब्द का स्त्रीलिंग होगा –
→ अध्यक्षा ।

18. लेखक शब्द का स्त्रीलिंग होगा –
→ लेखिका ।

19. 'वह' 'वे' 'यह' 'ये' 'आप' कौन-सा पुरुष है?
→ अन्य पुरुष ।

20. यह वह कौन-सा सर्वनाम है?
→ निश्चयवाचक सर्वनाम

21. कोई कुछ किसने किसे कौन-सा सर्वनाम है?
→ अनिश्चयवाचक सर्वनाम है?

~~22. आपने आपने आप~~
22. 'आपने आप' 'आप ही' 'आप स्वयं' कौन-सा सर्वनाम है?
→ निजवाचक सर्वनाम

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

२३. नियम का विशेषण है—
→ नियमित ।

२४. विशेषण के कितने भेद होते हैं?
→ चार

1. तू जिन्दा है तो

1. तू जिन्दा है तो ...... शीर्षक पाठ गद्य की कौन सी विधा है?
→ कविता

२. तू जिन्दा है तो ...... कविता में जीवन का कौन सा दृश्य प्रस्तुत है?
→ गहरे जीवन राग एवं उत्साह का ।

3. स्वराज्य का अर्थ है —
→ अपना राज्य ।

४. तू जिन्दा है तो ...... कविता में जीवन के किस पक्ष का वर्णन है?
→ आशावादी ।

Scanned with CamScanner

5. तू जिन्दा है तो कविता में कवि है –
→ शंकर शैलेन्द्र ।

6. कवि मनुष्य को कैसा जीवन जीने की प्रेरणा देता है?
→ हौसलें और उत्साह पूर्ण

7. कैसा व्यक्ति जिन्दा माना जाता है?
→ स्वाभिमानी

8. विनाश के बाद क्या होता है?
→ नवनिर्माण होता है।

2. ईदगाह

1. ईदगाह कहानी आधारित है?
→ बालक पर।

2. ईदगाह कहानी वंचित बचपन की परिस्थितियों पर किस ढंग से टिप्पणी करती है?
→ मार्मिक

3. कैसा जीवन वाले मन को व्यक्ति को सोचने के लिए मजबूर कर देता है?

→ अभावग्रस्त

4. हामिद खिलौने की जगह अपनी दादी के लिए क्या खरीदकर लाता है।

→ चिमटा

5. ईदगाह शीर्षक कहानी किसकी रचना है?

→ मुंशी प्रेमचंद

6. अमीना कौन थी?

→ हामिद की दादी।

7. रमजान के कितने दिनों बाद ईद आती है?

→ तीस दिनों बाद।

8. हामिद ने चिमटा क्यों खरीदा?

→ क्योंकि रोटी सेंकने में दादी का हाथ जलता था।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

कर्मवीर

1. व्यक्ति की कैसी निष्ठा उसके सफलता का निर्धारण करती है?
→ कर्म के प्रति।

2. अयोध्या सिंह उपाध्याय लिखित शीर्षक पाठ है —
→ कर्मवीर।

3. सभ्यता एवं संस्कृति के रक्षक और निर्माणकर्ता है?
→ कर्मवीर

4. 'कर्मवीर' की पहचान है?
→ जो कर्म के प्रति निष्ठा रखते है।

5. 'कर्मवीर' शीर्षक कविता किस भाषा में लिखित लिखी गयी है?
→ खड़ी हिन्दी।

6. कर्मवीर पुरुष क्या होते है?
→ कर्मवीर पुरुषार्थी होते है।

7. परिश्रम के द्वारा मनोवांछित लक्ष्य कौन प्राप्त करते है?
→ कर्मवीर।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

2. ईदगाह

1. ईद के दिन अमीना क्यों उदास थी?

=> ईद के दिन अमीना अपनी दीनता, बेसहारापन तथा आर्थिक दुर्दशा के कारण उदास थी। वह सोच रही थी कि अपने अनाथ पोते को इस महान पर्व के अवसर पर मेले जाने के लिए पैसे कहाँ से देगी, क्योंकि उसके घर में दाना भी नहीं था।

2. हामिद मिठाई या खिलौने के बदले चिमटा पसंद करता है, क्यों?

=> हामिद मिठाइयाँ या खिलौने के बदले चिमटा इसलिए पसंद करता है क्योंकि रोटी सेंकते समय दादी की उँगली जल जाती थी। अगर वह चिमटा लेकर दादी को देगा, उसकी उँगली नहीं जलेगी। मिठाई या खिलौने क्षणिक सुख देने वाले हैं। इसीलिए उसने चिमटा ही पसंद किया।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

4. मेले में चिमटा खरीदने से पहले हामिद के मन में कौन - कौन से विचार आये ? वर्णन कीजिए।

=> ~~मेले में चिमटा खरीदने से पहले हामिद के मन में कौन कौन से विचार~~

=> मेले में चिमटा खरीदने से पहले खिलौने खरीदने तथा मिठाई खाने के विचार आए, लेकिन उसके पास तीन पैसे ही थे, इसलिए इन चीजों को खरीदने का विचार छोड़कर वह लोहे की दुकान पर गया। वहाँ चिमटे देख उसे ख्याल आया कि दादी के चिमटा नहीं है।

7. चिमटा देखकर अमीना के मन में कैसा भाव जगा?

=> चिमटा देखकर अमीना के मन में क्रोध तथा स्नेह दोनों भाव

जगे। उसने धाती पीटकर कहा कि तुम बेसमझ लड़का है, क्योंकि तुमने कुछ खाया - पिया नहीं। लेकिन हामिद की बात सुनकर उसका क्रोध स्नेह में बदल गया। कि

4. त्योहार हमारे जीवन के अभिन्न अंग है। इस कथन की व्याख्या कीजिए।

=> त्योहार हमारे जीवन के अभिन्न अंग है, इस कथन के माध्यम से यह बताया गया है। कि त्योहार मानव जीवन में खुशी का क्षण होता है। इस खुशी के समय मानव सारे मतभावों से ऊपर उठकर सहज मानव बन जाता है। ये त्योहार ऐतिहासिक सांस्कृतिक, सामयिक तथा पौराणिक गाथाओं पर आधारित है। जो हमें त्याग सद्भाव सहिष्णुता उल्लास तथा सबसे प्रेम करने की सीख देता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

3. कर्मवीर

1. कर्मवीर की पहचान क्या है?

=> कर्मवीर विषम परिस्थिति में भी सहज बने रहते हैं। वे भाग्यवादी नहीं, कर्मवादी होते हैं। वे हर काम तत्क्षण करने का प्रयास करते हैं। किसी भी काम को कल पर टालना उनकी आदत नहीं होती। वे अपनी दृढ़ता से विपरीत वातावरण को अनुकूल बना लेते हैं। उनका सिद्धान्त 'करो या मरो' होता है।

2. परिश्रमी के द्वारा मनोवांछित लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है। कैसे?

=> परिश्रमी के द्वारा मनोवांछित लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है। इसके लिए किसी भी व्यक्ति को तन-मन से उस कार्य के प्रति समर्पित होना आवश्यक होता है। जब कोई व्यक्ति पूर्ण उत्साह के साथ लक्ष्यप्राप्ति के लिए परिश्रम

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

करता है तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता जाता है। यही आत्मविश्वास उसे कर्ममार्ग में आनेवाली बाधाओं से लड़ने तथा कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करता है।

3. आप किसे अपना आदर्श मानते हैं और क्यों?

=> मैं अपना आदर्श महात्मा गाँधी को मानता हूँ, जिन्होंने 'सत्य अहिंसा' के बल पर अंग्रेज जैसे शक्तिशाली शासकों को बिना अस्त्र - शस्त्र उठाए भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया और भारत को आजादी दिलाई। इसका मुख्य कारण यह था कि बापू जो निश्चय करते थे, उसकी पूर्णता के लिए अपने को अर्पित कर देते थे। अंग्रेजों ने उन्हें हृदयविदारक यातनाएँ दी, फिर भी गाँधीजी अपने लक्ष्य से च्युत नहीं हुए।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

4. बालगोबिन भगत

3. पुत्र - वधू द्वारा पुत्र की मुखाग्नि दिलवाना भगत के व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है?

=> पुत्रवधू द्वारा पुत्र की मुखाग्नि दिलवाना यह सिद्ध करता है कि बालगोबिन भगत रूढ़िवादी विचारों के कट्टर विरोधी थे। वह उन प्रचलित सामाजिक परम्पराओं के विरोधी थे, जो विवेक की कसौटी पर खरी नहीं उतरती थी यही कारण है कि पुत्र की मृत्यु होने पर मुखाग्नि पुत्रवधू से दिलवाई, जबकि मान्यता है कि मृत शरीर को मुखाग्नि पुरुष वर्ग के हाथों दी जाती है।

1. "धर्म का मर्म आचरण में है, अनुष्ठान में नहीं।" स्पष्ट कीजिए

=> इस कथन के माध्यम से लेखक ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि धर्मपालन आडम्बरों या अनुष्ठानों के

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

निर्भर है में नहीं; बल्कि आचरण की पवित्रता और शुद्धता में होता है। जब व्यक्ति अपने सिद्धान्त के अनुरूप आचरण करता है, जब कथनी एक करनी एक जैसी होती है तथा जो अपनी दिनचर्या और निर्णय मनुष्यता के अनुरूप करता है। वह जीवन मूल्य को सही रूप में जान लेता है।

2. बालगोबिन भगत कबीर को 'साहब' मानते थे। इसके क्या - क्या कारण हो सकते हैं?

=> बालगोबिन भगत कबीर को 'साहब' इस कारण मानते थे। क्योंकि वह कबीर द्वारा बताए गए आदर्शों का पालन करते थे। भगत भी कबीर की भाँति खूब बात बोलते थे और खरा व्यवहार रखते थे।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

भाषा - उच्चरित ध्वनि-संकेतो की सहायता से भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति अथवा जिसकी मदद से मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय या सहयोग करते हैं, उस यादृच्छिक, रूढ़ ध्वनि-संकेत की प्रणाली को भाषा कहते हैं।

भाषा तीन प्रकार के होते हैं -

(i) भाषा ध्वनि-संकेत - सार्थक शब्दों के समूह या संकेत को भाषा ध्वनि-संकेत कहते हैं। जैसे - रेलगाड़ी का गार्ड हरी झंडी दिखाकर यह भाव व्यक्त करता है कि रेलगाड़ी अब खुलनेवाली है।

(ii) लिखित भाषा - जिस ~~शब्द~~ शब्द को लिखकर किसी को समझाने या बताने का प्रयास किया जाता है, उसे लिखित भाषा कहते हैं। जैसे - कुत्ता, हाथी, बिल्ली आदि।

(iii) मौखिक भाषा - जिन शब्दो को हम बोलकर किसी को समझाने का प्रयास करते हैं, उसे मौखिक भाषा कहते हैं। जैसे - बच्चा, बूढ़ा, जवान आदि।

अनुनासिक (ँ) - ऐसे स्वरों का उच्चारण करते समय नाक से कम तथा मुँह से अधिक ध्वनि निकलती है, उसे अनुनासिक कहते हैं। जैसे - गाँव, दाँत, आँगन आदि।

अनुस्वार (ं) - यह स्वर के बाद आनेवाला व्यंजन है, जिसका उच्चारण करते समय नाक से अधिक तथा मुँह से कम ध्वनि निकलती है, उसे अनुस्वार कहते हैं। जैसे - अंश, हंस, अंगूर आदि।

निरनुनासिक - ऐसा स्वर वर्ण जिनका उच्चारण केवल मुँह द्वारा निकली गई ध्वनि से होता है, उसे निरनुनासिक कहते हैं। जैसे - इधर, उधर, आप, अपना, घर इत्यादि।

वर्ण

वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका खंड या टुकड़ा नहीं किया जा सकता है। जैसे - अ, आ, इ, ई इत्यादि।

वर्ण दो प्रकार के होते हैं -

(i) स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण स्वतः होता है, उसे स्वर वर्ण कहते हैं, जैसे, अ, आ, ...

स्वर वर्ण के भेद -

(i) ह्रस्व स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करते में अति अल्प समय लगता है, उसे ह्रस्व स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे - अ, इ, उ, ऋ।

(ii) दीर्घ स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करते में ह्रस्व स्वर वर्ण की अपेक्षा दोगुना समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(iii) प्लुत स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण ~~करने में ह्रस्व~~ स्वर की अपेक्षा तीन गुना समय लगता है, उसे प्लुत स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे, ओउम, ॐ

व्यंजन वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में स्वर वर्ण की मदद ली जाती है, उसे व्यंजन वर्ण कहते हैं। जैसे - क -- ह।

व्यंजन वर्ण के भेद -

(i) स्पर्श व्यंजन - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण कंठ, तालु, मूर्द्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्श करने से होता है, उसे स्पर्श व्यंजन कहते हैं। जैसे - क वर्ग से प वर्ग तक।

(ii) अंतःस्थ व्यंजन - वैसे वर्ण जिनका उच्चारण जीभ, तालु, दाँत और ओष्ठ के स्पर्श से होता है, उसे अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं। अंतःस्थ व्यंजन को 'अर्द्धस्वर' भी कहा जाता है। जैसे - य, र, ल, व।

Scanned with CamScanner

(iii) ऊष्म व्यंजन – वैसे वर्ण जिनका उच्चारण हमारे शरीर के अंदर एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्म वायु से होता है, उसे ऊष्म व्यंजन कहते हैं। जैसे - श, ष, स, ह।

वायु प्रक्षेप की दृष्टि से व्यंजन वर्ण के दो भेद होते हैं –

(i) अल्पप्राण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में श्वास पहले से अल्प मात्रा में निकले तथा जिनमें हकार जैसी ध्वनि नहीं होती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला, तीसरा एवं पाँचवा वर्ण तथा अंत: स्थ व्यंजन अल्पप्राण व्यंजन हैं।

(ii) महाप्राण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में श्वास अधिक मात्रा में तथा हकार जैसी ध्वनि विशेष रूप से निकलती है, उसे महाप्राण व्यंजन कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का दूसरा एवं चौथा वर्ण तथा ऊष्म व्यंजन वर्ण महाप्राण व्यंजन हैं।

नाद की दृष्टि से व्यंजन वर्ण के दो भेद होते हैं –
(i) अघोष वर्ण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में हमारी स्वरतंत्रियाँ झंकृत नहीं होती हैं, उसे अघोष वर्ण कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला एवं दूसरा वर्ण तथा श, ष, स।

(ii) घोष वर्ण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करते में हमारी स्वरतंत्रियाँ झंकृत होती हैं, उसे घोष वर्ण कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला, तीसरा एवं पाँचवा वर्ण, सभी स्वर वर्ण, य, र, ल, व और ह।

विसर्ग (:) अनुस्वार की तरह प्रयोग होनेवाला यह एक व्यंजन वर्ण है तथा इसका उच्चारण 'ह' की तरह होता है। हिन्दी में अब इसका अभाव होता जा रहा है, लेकिन तत्सम शब्दों के प्रयोग में इसका आज भी प्रयोग होता है। जैसे - पय: पान, प्रात: काल, अत: इत्यादि।

बलाघात (स्वराघात) – बोलते समय अर्थ या उच्चारण की स्पष्टता के लिए जब हम किसी अक्षर पर विशेष बल देते हैं, तो इस क्रिया का बलाघात या स्वराघात कहा जाता है। जैसे - विष्णु, इन्द्र, राम, इत्यादि।

संगम – उच्चारण करते समय दो ध्वनियों के बिच जो विराम आता है, उसे संगम कहते हैं। जैसे - तुम्हारे, उत्पन्न इत्यादि।

अनुतान – बोलने के क्रम में जो सुर में उतार-चढ़ाव होता है, उसे अनुतान या सुरलहर कहते हैं। जैसे - कौन करेगा? तथा करेगा कौन?

लिपि – वर्णों को लिखने के लिए जिन सांकेतिक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उसे लिपि कहते हैं। जैसे - ा, ि, ी, ---

ध्वनि – भाषा की सबसे छोटी इकाई को ध्वनि कहते हैं।

वर्तनी – वर्णों को ठीक ढंग से लिखने की रीति को वर्तनी कहते हैं।

Scanned with CamScanner

अयोगवाह - वैसा वर्ण जो न तो स्वर है न व्यंजन फिर भी वह ध्वनि का वहन करता है, उसे अयोगवाह कहते हैं। जैसे - अं, अः ।

हल् - व्यंजन वर्णों के निचे जब खड़ी रेखा (्) लगाई जाती है, उसे हल् कहते हैं। हल् लगाने का अर्थ है कि व्यंजन में स्वरवर्ण का बिलकुल अभाव है या व्यंजन आधा है। जैसे - क्, ख्, ---

वर्ण-विच्छेद - वर्णों को अलग करने की रीति को वर्ण-विच्छेद कहते हैं। जैसे - क - क्+अ ।

पंचमाक्षर - अनुनासिक वर्णों को ही पंचमाक्षर वर्ण कहते हैं। जैसे - ङ, ञ, ण, न, म ।

संयुक्ताक्षर - वैसा वर्ण जिसमें दो या दो से अधिक व्यंजन वर्णों का मेल होता है, उसे संयुक्त व्यंजन कहते हैं। जैसे, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ।

उच्चारण स्थान का विवरण -

स्थान	वर्ण	नाम
कंठ -	अ, आ, क् ख्, ग्, घ्, ङ्	- कंठ्य वर्ण
तालु -	इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श्	- तालव्य वर्ण
मूर्द्धा -	ऋ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र्, ष्	- मूर्द्धन्य वर्ण
दंत -	त्, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स्	- दंत्य वर्ण
ओष्ठ -	उ, ऊ, प्, फ्, ब्, भ्, म्	- ओष्ठ्य वर्ण
कंठ-तालु -	ए, ऐ	- कंठ-तालव्य वर्ण
कंठ-ओष्ठ -	ओ, औ	- कंठोष्ठ्य वर्ण
दंतोष्ठ -	व्	- दंतोष्ठ्य वर्ण
नासिका -	ङ्, ञ्, ण्, न्, म्	- नासिक्य वर्ण

Scanned with CamScanner

IX, X

व्याकरण

संज्ञा (1)

संज्ञा - किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव, गुण, दोष, मात्रा, अनुभव आदि को संज्ञा कहते हैं। जैसे- राम, पुस्तक, मेला, लज्जा इत्यादि
संज्ञा के पाँच भेद होते हैं -

(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष या खास व्यक्ति, स्थान, नाम का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- राम, रामायण, हिमालय आदि

(ii) जातिवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी जातिभर का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- पहाड़, गाय आदि

(iii) समूहवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी झुंड, समूह या समुदाय का बोध होता है, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- सेना, वर्ग, सभा, गुच्छा इत्यादि।

(iv) द्रव्यवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी द्रव्य या धातु, वस्तु की परिमाण / मात्रा का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - सोना, चाँदी, घी, तेल इत्यादि

(v) भाववाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु के गुण, दोष, धर्म, स्वभाव इत्यादि का बोध होता है उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- बुढ़ापा, ईमानदारी, महत्ता इत्यादि ॥

सर्वनाम (2)

सर्वनाम - संज्ञाओं अथवा नामों के बदले जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे- मैं, वह, तुम, आप, जो इत्यादि।

सर्वनाम के भेद -

(क) पुरुषवाचक - बोलने वाले, सुननेवाले तथा जिसके विषय में जो कुछ कहा या सुना जाये, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे मैं, हम, तुम, वह इत्यादि।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद-

(i) उत्तम पुरुष - वक्ता / बोलनेवाले को उत्तम पुरुष कहते हैं। जैसे- मैं, हम, मैंने, मुझको इत्यादि।

(ii) मध्यम पुरुष - सुननेवाले को मध्यम पुरुष कहते हैं। जैसे- तुम, आप, तू, तुमलोग इत्यादि।

(iii) अन्यपुरुष - जिसके विषय में कुछ कहा या सुना जाये, उसे अन्य पुरुष कहते हैं। जैसे- वह, वे लोग, यह, वे, ये इत्यादि।

(ख) निश्चयवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी व्यक्ति या भाव के निश्चय होने का बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - यह, वह इत्यादि।

Scanned with CamScanner

(ग) अनिश्चय वाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव के अनिश्चय होने का बोध होता है, उसे अनिश्चय-वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- कोई, कुछ आदि।

(घ) संबंधवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी संज्ञा के साथ संबंध प्रकट होता है, उसे संबंध-वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- वह कौन है, जो दरवाजे पर खड़ा है।

(ङ) निजवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से स्वयं या निज का बोध होता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - मैं यह काम स्वयं ही कर लूँगा।

(च) प्रश्नवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से प्रश्न पूछने या करने का बोध होता है, उसे प्रश्न-वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- कौन, क्या, कहाँ, क्यों इत्यादि।

विशेषण

विशेषण - संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। जैसे- काला, मोटा, छोटा, कमजोर इत्यादि।

विशेषण के भेद —

(i) गुणवाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु स्थान के गुण, दोष, स्वभाव, अवस्था का बोध होता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - काला, मोटा, गोल, भूखा इत्यादि।

(ii) परिमाणवाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी वस्तु की माप-तौल या परिमाण/मात्रा का बोध होता है, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - थोड़ा, कम इत्यादि।

(iii) संख्यावाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु की संख्या का बोध होता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - तीन पुस्तकें, चार कलमें, दो आदमी इत्यादि।

(iv) सार्वनामिक विशेषण - किसी संज्ञा के पहले आनेवाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे - यह पुस्तक अच्छी है।

Scanned with CamScanner

क्रिया

क्रिया - जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे - वह पढ़ता है। मैं सोता हूँ।

क्रिया के भेद -

(i) सकर्मक क्रिया - जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म रहता है तथा क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे राम पुस्तक पढ़ता है।

(ii) अकर्मक क्रिया - जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म नहीं रहता तथा क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे - राम पढ़ता है।

सहायक क्रिया -

मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट करने में जो क्रियाएँ सहायता करती हैं, उसे सहायक क्रिया कहते हैं। जैसे - है, था, रहे, गा रहे इत्यादि।

प्रेरणार्थक क्रिया -

जिन क्रियाओं से यह पता चलता है कि कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे से करने के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे - राम, मोहन से काम करवाता है।

वाच्य

क्रिया के उस परिवर्तन को वाच्य कहते हैं, जिसके द्वारा यह ज्ञात होता है कि वाक्य में कर्त्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है तथा इनमें किसके अनुसार क्रिया के पुरुष, लिंग, वचन आदि आये हैं।

वाच्य के भेद -

(i) कर्तृवाच्य - क्रिया के उस रूपांतर को कर्तृवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्त्ता की प्रधानता का बोध हो। जैसे - लड़का आम खाता है। मोहन पुस्तक पढ़ता है।

(ii) कर्मवाच्य - क्रिया के उस रूपांतर को कर्मवाच्य कहते हैं, जहाँ वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध होता है। जैसे - पुस्तक पढ़ी जाती है।

(iii) भाववाच्य - क्रिया के उस रूपांतर को भाववाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में भाव की प्रधानता रहती है। जैसे - धूप में चला नहीं जाता।

प्रविशेषण -

विशेषण की विशेषता बतलाने वाले शब्द को प्रविशेषण कहते हैं। जैसे राम बहुत तेज विद्यार्थी है। यहाँ 'तेज' विशेषण है और उसका भी विशेषण है 'बहुत'।

Scanned with CamScanner

लिंग

संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव की जाति (स्त्री या पुरुष) का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। जैसे - राजा, घोड़ा, लड़का, कुत्ता - कुतिया इत्यादि।

लिंग के भेद -

(i) पुँल्लिंग - जिस शब्द से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुँल्लिंग कहते हैं। जैसे - बालक, खटमल आदि

(ii) स्त्रीलिंग - जिस शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं। जैसे - रानी, घोड़ी, लड़की इत्यादि।

पुँल्लिंग शब्दों का लिंग-निर्णय -

(क) अकारांत तत्सम शब्द पुँल्लिंग होते हैं। जैसे - धन, जन, वन, जल आदि

(ख) हिन्दी के आकारांत शब्द पुँल्लिंग होते हैं। जैसे - लड़का, पटाखा इत्यादि

नोट - उक्त नियम के कुछ अपवाद भी हैं।

स्त्रीलिंग शब्दों का लिंग-निर्णय -

आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत तत्सम शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे - दया, माया, आज्ञा, घोषणा, सूचना, ईर्ष्या, इच्छा इत्यादि। पूर्ति, नारी, गोष्ठी, मृत्यु, वस्तु, ऋतु, वायु आदि।

लिंग-निर्णय के सामान्य नियम -

(क) जिन शब्दों के अंत में त्व, ना, आ, आटा, आव, आवा, औड़ा, पन इत्यादि प्रत्यय लगते हों, वे पुँल्लिंग होते हैं। जैसे - महत्त्व, पढ़ना, शौर्य, घेरा, सन्नाटा, बुढ़ापा, फैलाव, पहनावा, पकौड़ा, मित्र, बचपन, पागलपन इत्यादि।

(ख) जिन शब्दों के अंत में आई, आवट, आस, आहट, इया, ई, त, नी, री, ली इत्यादि प्रत्यय लगते हों, वे स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - मलाई, बनावट, मिठास, घबराहट, टिकिया, गरीबी, चाहत, चटनी, कोठरी, डफली इत्यादि।

(ग) संस्कृत (तत्सम) के अकारांत शब्द पुँल्लिंग तथा आकारांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - जल, स्वर्ग, भिक्षा, शिक्षा, परीक्षा इत्यादि

(घ) तद्भव (हिंदी) के लिंग प्रायः तत्सम (संस्कृत) के लिंग के अनुसार होते हैं। जैसे - आश्चर्य-अचरज, संध्या-साँझ, स्वर्ण-सोना इत्यादि

(ङ) हिन्दी की द्रव्यवाचक संज्ञाएँ पुँल्लिंग होती हैं। जैसे - लोहा, चूना, मोती, दही, घी, तेल, सोना इत्यादि।

अपवाद - चाँदी स्त्रीलिंग है।

Scanned with CamScanner

वचन

संख्या का बोध कराने वाले शब्द वचन कहलाते हैं। जैसे - लड़का, घोड़े आदि

वचन के भेद -

(i) एकवचन - संज्ञा के जिस रूप से उसके एक होने का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे - लड़का, घर, कलम इत्यादि।

(ii) बहुवचन - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे - घोड़े, नदियाँ इत्यादि

वचन परिवर्तन के नियम -

(i) आकारान्त शब्दों के अंत में 'ए' लगाकर बहुवचन शब्द बनाते हैं जैसे लड़का - लड़के, घोड़ा - घोड़े इत्यादि।

(ii) व्यंजनांत मूल शब्दों के अंत में 'आ' का लोप कर उसके स्थान पर 'एँ' लगाकर बहुवचन बनता है। जैसे - नहर - नहरें, रात - रातें इत्यादि।

(iii) आकारान्त/उकारान्त/ओकारांतवाले शब्दों में अंतिम स्वर का लोप नहीं होता है, अंतिम स्वर के बाद एँ लगाते हैं। जैसे - महिला - महिलाएँ, वधू - वधुएँ इत्यादि।

(iv) ईकारान्त संज्ञा शब्दों में 'आँ' बहुवचन सूचक प्रत्यय लगता है तो अंतिम स्वर 'ई' का ह्रस्व 'इ' हो जाता है जैसे नारी - नारियाँ, टोपी - टोपियाँ इत्यादि।

(v) समुदाय सूचक शब्दों का प्रयोग बहुवचन में होता है। जैसे - मनुष्य, जनता, भीड़, मवेशी इत्यादि

(vi) कुछ शब्दों के एकवचन एवं बहुवचन एक समान होते हैं। जैसे क्रोध, भय, दान, स्वामी, तपस्वी इत्यादि

(vii) लोग, दर्शन, प्राण, बाल, हस्ताक्षर, आँसू, समाचार सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे

(viii) दया, प्रेम, जल, दूध, वर्षा, हवा, आग सदा एकवचन में प्रयुक्त होते हैं।

(ix) कुछ शब्दों के बहुवचन बनाने के लिए शब्दों के अंत में 'गण' या 'वृन्द' लगाते हैं। जैसे कर्मचारीगण, शिक्षकगण, छात्रवृन्द इत्यादि।

पद -

जब वाक्य में शब्द के साथ विभक्ति लगी रहती है, उसे पद कहते हैं। अर्थात् विभक्ति सहित शब्द पद कहलाते हैं। जैसे, राम पुस्तक को पढ़ता है।

पद-परिचय - पद परिचय का अर्थ होता है, पदों का अन्वय, अर्थात् विश्लेषण। वाक्य के प्रत्येक पद को अलग-अलग उसका स्वरूप और दूसरे पद से संबंध बताना 'पद-परिचय' कहलाता है। जैसे राम कहता है कि मैं मोहन की पुस्तक पढ़ सकता हूँ।

Scanned with CamScanner

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप और कार्य से उनका संबंध वाक्य में क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। जैसे - मैंने पत्र लिखा। राम ने मोहन को पीटा।

कारक के भेद —

(i) कर्त्ता कारक - संज्ञा के जिस रूप से क्रिया करनेवाले का बोध होता है, उसे कर्त्ता कारक कहते हैं। जैसे - तुमने आम खाया। इसका परसर्ग 'ने' होता है।

(ii) कर्म कारक - वाक्य में क्रिया का फल जिन शब्द पर पड़ता है, उसे कर्मकारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'को' है। जैसे - मोहन ने आम खाया।

(iii) करण कारक - जो क्रिया की सिद्धि में साधन के रूप में काम आये, उसे करण कारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'से, द्वारा' होता है। जैसे - राम ने रावण को बाण से मारा।

(iv) सम्प्रदान कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी को कुछ दिये जाने या किसी के लिए कुछ करने का बोध हो, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। जैसे - वह मेरे लिए पानी लाता है। इसका परसर्ग 'के, लिए, वास्ते, के हेतु' होता

(v) अपादान कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से विरह, विछुड़ना, दूरी, तुलना आदि का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। जैसे - पेड़ से पत्ते गिरते हैं। इसका परसर्ग 'से' होता है।

(vi) संबंध कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी एक वस्तु का अन्य वस्तु के साथ संबंध प्रकट होता है, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसका परसर्ग अर्थात् चिन्ह का, की, के होता है। जैसे - मोहन की गाय।

(vii) अधिकरण कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे - छत पर लड़का बैठा है। इसका परसर्ग 'में, पर' होता है।

(viii) सम्बोधन कारक - जिस शब्द से किसी को पुकारने या बुलाने का भाव प्रकट होता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। इसका परसर्ग "हे, हो, अरे, ओ" होता है। जैसे - हे, राम यहाँ आओ।

निबंध —

(i) बिहार पहले और अब
(ii) छात्र और अनुशासन
(iii) समय की महत्ता
(iv) दहेज प्रथा
(v) बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
(vi) आतंकवाद
(vii) बेकारी की समस्या
(viii) वृक्षारोपण
(ix) प्रदूषण
(x) खेल का महत्व
(xi) साम्प्रदायिकता
(xii) बढ़ती हुई महँगाई
(xiii) नारी शिक्षा
(xiv) जनसंख्या विस्फोट
(xv) आदर्श छात्र
(xvi) युवा पीढ़ी एवं नशीला पदार्थ
(xvii) स्वच्छता

नोट — विद्यार्थीगण उपरोक्त निबंध की तैयारी अपने-अपने स्तर से करेंगे।

Scanned with CamScanner